[This question paper contains 4 printed pages

Sr. No. of Question Paper : 8911

Unique Paper Code : 12051602

Name of the Paper : Hindi Nibandh Aur Anya Gadya Vidhaein
हिंदी निबंध और अन्य गद्य विधाएँ

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS**

Semester : VI

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या लिखिए - (8+7=15)

(क) अभिषेक की बात चली, मन में अभिषेक हो गया और मन में राम के साथ राम का मुकुट प्रतिष्ठित हो गया । मन में प्रतिष्ठित हुआ, इसलिए राम ने राजकीय वेश उतारा, राजकीय रथ से उतरे, राजकीय भोग का परिहार किया, पर मुकुट तो लोगों के मन में था, कौसल्या के मातृ-स्नेह में था, वह कैसे उतरता, वह मस्तक पर विराजमान रहा और राम भीगें तो भीगें मुकुट न भीगने

P.T.O.

पाये, इसकी चिंता बनी रही। राजा राम के साथ उनके अंगरक्षक लक्ष्मण का कमर-बंद दुपट्टा भी (प्रहरी की जागरुकता का उपलक्षण) न भीगने पाये और अखंड सौभाग्यवती सीता की मांग का सिंदूर न भीगने पाये, सीता भले ही भीग जाये।

अथवा

लोभियों का दमन योगियों के दमन से किसी प्रकार कम नहीं होता। लोभ के बल से वे काम और क्रोध को जीतते हैं, सुख की वासना का त्याग करते हैं, मान-अपमान में समान भाव रखते हैं। अब और चाहिए क्या ? जिससे वे कुछ पाने की आशा रखते हैं वह यदि उन्हें दस गालियाँ भी देता है तो उनकी आकृति पर न रोष का कोई चिह्न प्रकट होता है और न मन में ग्लानि होती है। न उन्हें मक्खी चूसने से घृणा होती है और न रक्त चूसने में दया। सुन्दर-से-सुन्दर रूप देखकर वे अपनी एक कौड़ी भी नहीं भूलते।

(ख) जिस बृहत्तर भारत के लिए हरेक भारतीय को उचित अभिमान है, क्या उसका निर्माण इन्हीं घुमक्कड़ी की चरण-धूलि ने नहीं किया? केवल बुद्ध ने ही अपनी घुमक्कड़ी से प्रेरणा नहीं दी, बल्कि घुमक्कड़ों का इतना जोर बुद्ध से एक दो शताब्दियों पूर्व ही था, जिसके ही कारण बुद्ध जैसे घुमक्कड़-राज इस देश में पैदा हो सके। उस वक्त पुरुष ही नहीं, स्त्रियाँ तक जम्बूस-वृक्ष की शाखा ले अपनी प्रखर प्रतिभा का जौहर दिखाती, बाद में कूपमंडूकों को पराजित करती सारे भारत में मुक्त होकर विचरा करतीं थीं।

अथवा

शूद्र द्विज (या ब्राह्मण) का पूर्व-रूप है, वैसे ही जैसे मूर्ति का पूर्व-रूप अनगढ़ पत्थर। और मैं अपनी अनगढ़ता को गर्व से देखता हूँ, इसलिए कि जब तक अनगढ़ हूँ तभी तक विश्वविराट की मूर्तियों की सम्भावनाएँ मुझमें सुरक्षित हैं। गढ़ा गया नहीं कि एकरूपता, जड़ता गले पड़ी। श्रीकृष्ण की मूर्ति का पत्थर श्रीकृष्ण ही की मूर्ति भावना का प्रतीक रह जाता है। उसे राधा बनाना असंभव है।

2. 'जुबान' निबंध में लेखक ने जुबान की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है, स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'आचरण की सभ्यता' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

3. 'कुटज' निबंध की तात्विक विवेचना कीजिए।

अथवा

'रस आखेटक' निबंध की मूल संवेदना लिखिए। (15)

4. 'निराला की साहित्य साधना' पाठ के आधार पर निराला के जीवन संघर्षों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

आत्मकता के तत्त्वों के आधार पर 'अपनी खबर' की समीक्षा कीजिए। (15)

5. रेखाचित्र के तत्त्वों के आधार पर 'सुभान खाँ' पाठ का मूल्यांकन कीजिए।

अथवा

'अज्ञेय के साथ' पाठ के आधार पर अज्ञेय की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (15)